है। भक्ति की ये सारी क्रियाएँ परम मंगलमय और दिव्य शक्तिसम्पन्न हैं। वस्तुतः इनसे भक्त को पूर्ण स्वरूप-साक्षात्कार हो जाता है। तब उसमें केवल श्रीभगवान् का संग प्राप्त कर लेने की अभिलाषा रहती है। इसी का नाम **योग** है। श्रीगोविन्द के अनुग्रह से ऐसे भक्त का इस संसार में फिर कभी जन्म नहीं होता। **क्षेम** का अर्थ है, श्रीभगवान् का कृपामय संरक्षण। श्रीभगवान् योग द्वारा कृष्णभावना की प्राप्ति में भक्त की सहायता करते हैं और उसके पूर्ण कृष्णभावनाभावित हो जाने पर दुःखमय बद्धजीवन में फिर गिरने से वे ही उसकी रक्षा करते हैं।

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः।
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम्।।२३।।

ये=जो; **अपि**=भी; **अन्य**=दूसरे; **देवताः**=देवताओं को; **भक्ताः**=भक्त; **यजन्ते**=पूजते हैं; **श्रद्धया-अन्विताः**=श्रद्धाभाव से; **ते**=वे; **अपि**=भी; **माम्**=मुझे; **एव**=ही; **कौन्तेय**=हे कुन्तीनन्दन अर्जुन; **यजन्ति**=यज्ञरूप से भजते हैं; **अविधि-पूर्वकम्**=अविधिपूर्वक, अर्थात् अज्ञान से।

अनुवाद

हे अर्जुन! जो सकाम भक्त श्रद्धासहित अन्य देवताओं को यज्ञ द्वारा उपासते हैं, वे भी मेरी ही उपासना करते हैं; परन्तु उनकी वह आराधना अविधिपूर्वक है, अर्थात् यथार्थ ज्ञान से युक्त नहीं है।।२३।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण का कथन है, 'देवताओं के उपासक अल्पज्ञ हैं, यद्यपि ऐसी उपासना भी अविधि से मेरी ही उपासना है।' उदाहरणार्थ, वृक्ष के मूल का सिंचन करने के स्थान पर जब मनुष्य पत्ते, शाखा आदि को जल से सींचता है, तो वह ऐसा अल्पज्ञता के कारण अथवा विधान के प्रमादवश ही करता है। ऐसे ही, केवल उदर की पूर्ति करने से देह के सभी अंग-प्रत्यंगों की सेवा हो जाती है। परमेश्वर श्रीकृष्ण के सार्वभौम प्रशासन में देवता अलग-अलग पदाधिकारी और निदेशक हैं। प्रजा के लिए राज्य के विधान पालनीय हैं, पदाधिकारियों अथवा निदेशकों के कल्पित विधान नहीं। इसी प्रकार, एकमात्र श्रीभगवान् ही जीवमात्र के आराध्य हैं। श्रीभगवान् की आराधना से उनके विभिन्न पदाधिकारी एवं निदेशक देवता अपने-आप तुष्ट हो जायेंगे। शासन के प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने वाले अधिकारियों को घूस देना अपराध समझा जाता है। इसी को यहाँ **अविधिपूर्वकम्** कहा है। भाव यह है कि अनावश्यक रूप से देवोपासना करना श्रीकृष्ण को प्रिय नहीं है।

अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च।
न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते।।२४।।

अहम्=मैं; **हि**=ही; **सर्व**=सारे; **यज्ञानाम्**=यज्ञों का; **भोक्ता**=भोक्ता; **च**=और; **प्रभुः**=स्वामी; **एव**=भी (हूँ); **च**=तथा; **न**=नहीं; **तु**=परन्तु; **माम्**=मुझे; **अभिजानन्ति**